किशोर विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

आशा शर्मा, (शोधार्थी) **डॉ. स्वाति पाण्डेय (प्राध्यापक)**

भारती विश्वविद्यालय, पुलगांव, (दुर्ग) **भारती विश्वविद्यालय,पुलगांव,(दुर्ग)**

सारांश

यह शोध माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमताओं पर शालेय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करता है। किशोरावस्था जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में विद्यालय का वातावरण न केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करता है, बल्कि उनके व्यक्तित्व और अभिव्यक्ति के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक सकारात्मक शालेय वातावरण आत्मविश्वास, रचनात्मकता और संवाद कौशल को प्रोत्साहित करता है, जबकि नकारात्मक या दबावपूर्ण माहौल अभिव्यक्ति को बाधित कर सकता है, जिससे संकोच, आत्मसम्मान की कमी और तनाव उत्पन्न हो सकता है। यह अध्ययन भिलाई के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में 200 विद्यार्थियों पर किया गया, जिसमें 100 निजी और 100 सरकारी विद्यालय के छात्र-छात्राएँ शामिल थे। डेटा संग्रह के लिए एम. इमरान द्वारा विकसित *स्कूल क्लाइमेट स्केल* और आर.पी. वर्मा एवं यू. मिश्रा द्वारा विकसित *सेल्फ एक्सप्रेशन इन्वेंटरी* का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण एसपीएसएस सॉफ़्टवेयर की सहायता से किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि शालेय वातावरण और विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमताओं के बीच महत्वपूर्ण संबंध है। निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का औसत अंक (100.27 शालेय वातावरण और 44.08 अभिव्यक्ति) तथा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का औसत अंक (101.97 शालेय वातावरण और 42.63 अभिव्यक्ति) यह इंगित करता है कि दोनों प्रकार

के विद्यालयों में सकारात्मक वातावरण अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है, हालांकि निजी विद्यालयों का वातावरण इस दृष्टि से अधिक प्रभावी पाया गया।

शोध निष्कर्ष में यह स्पष्ट हुआ कि किशोर विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति के विकास में शालेय वातावरण प्रमुख भूमिका निभाता है। विद्यालयों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका वातावरण सहयोगात्मक, समावेशी और प्रेरणादायक हो, ताकि विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता का पूर्ण विकास हो सके।

मुख्य शब्द: शालेय वातावरण, अभिव्यक्ति, किशोरावस्था, निजी विद्यालय, सरकारी विद्यालय।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है| शिक्षा के पथ पर चलकर ही व्यक्ति सत्य पर पहुँचता है| अर्थात् शिक्षा वह माध्यम है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे एक योग्य एवं संस्कारित नागरिक बनती है| ज्ञान का उजाला ही मनुष्य के जीवन में फैले अज्ञान के अंधकार को मिटाता है| शिक्षा का अमृत ही मानव को इस नश्वर संसार में अमरत्व प्रदान करता है| विद्यालय एक पवित्र हवन शाला है जिसमें शिक्षकों के मस्तिष्क में उपस्थित ज्ञान एवं अनुभव का हवन होता है और उसकी ज्वालाओं से सुनागरीकों का निर्माण होता है हवन शाला की सुगंध से समाज मदमस्त होता है और अपने पूरे सेवा काल में अध्यापक ज्ञान की आहुति दे सकें। किशोरावस्था जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण है जिसमें शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक विकास तेजी से होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व और अभिव्यक्ति के विकास के लिए विद्यालय को एक महत्वपूर्ण स्थान मानते हैं। विद्यालय का वातावरण न केवल उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करता है, बल्कि उनके मानसिक और सामाजिक व्यवहार को भी आकार देता है। शालेय वातावरण में शिक्षकों का व्यवहार, सहपाठियों के साथ संबंध, शैक्षणिक संसाधन, और सह-शैक्षणिक गतिविधियाँ किशोरों की अभिव्यक्ति पर गहरा प्रभाव डालते हैं। सकारात्मक और प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, रचनात्मकता, और संवाद कौशल में सुधार करने में

सहायता करता है। इसके विपरीत, दबावपूर्ण या नकारात्मक वातावरण किशोरों की अभिव्यक्ति को बाधित कर सकता है, जिससे उनमें संकोच, आत्मसम्मान की कमी और तनाव उत्पन्न हो सकता है।

- **अभिव्यक्ति**

अभिव्यक्ति का अर्थ विचारों के प्रकाशन से है। व्यक्तित्व के समायोजन के लिए मनोवैज्ञानिकों ने अभिव्यक्ति को मुख्य साधन माना हैं, मनुष्य अन्य सभी जीवों की तुलना में इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि उनके पास विचार करने की शक्ति है तथा वह अपने भावों को किसी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करने में सक्षम है, समता मूलक समाज में यह आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक नागरिक को अपनी बात कहने का अधिकार हो, आधुनिक लोकतान्त्रिक समाज के समुचित विकास के मौके उपलब्ध कराने में अभिव्यक्ति की आजादी एक पहलू है जो हर हालत में उपलब्ध होना ही चाहिए|

- **शालेय वातावरण का अर्थ**

शालेय वातावरण का अर्थ है वह सभी तत्व और परिस्थितियाँ जो विद्यालय में छात्रों की शिक्षा और विकास को प्रभावित करते हैं। बचपन में स्कूल के दिनों की यादें हर किसी के मन में एक खास जगह रखती हैं। ये यादें उन क्षणों की होती हैं जब हम विद्यालय में सुरक्षित महसूस करते थे और हमारे चारों ओर देखभाल करने वाले वयस्क होते थे। स्कूल का माहौल सिर्फ व्यक्तिगत अनुभवों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक सामूहिक प्रक्रिया का हिस्सा है, जो छात्रों के सीखने और विकास को आकार देती है। एक सकारात्मक शाला का माहौल न केवल अकादमिक सफलता के लिए आवश्यक है, बल्कि यह बच्चों के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

अभिव्यक्ति एक ऐसा विचार है कि जिसके माध्यम से बालक-बालिकाओं में निहित मौलिक सम्भावनाओं को विकसित किया जाता है। बालकों में चिन्तन एवं मौलिक अभिव्यक्ति की

दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। अभिव्यक्ति का शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सर्वत्र महत्व है। शैक्षिक कार्यक्रम को उपयोगी बनाने तथा लक्ष्य पूर्ति की दृष्टि से अभिव्यक्ति का विशेष महत्व है। शालेय वातावरण सामाजिक कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है| मानव मस्तिष्क के सामान, विद्यालय समाज का मस्तिष्क है|शाला ऐसा स्थान है जहाँ विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक भावात्मक एवं नैतिक विकास को बल देती है| शाला केवल भवन ही नहीं बल्कि यह कला, ज्ञान,विज्ञान,एवं संस्कृति के गतिशील केंद्र हैं|जो विद्यार्थी के जीवन में ऊर्जा का संचार कर उसके व्यक्तित्व को निखारते है**,** और उसकी जन्मजात शक्तियों के विकास के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करते है| शालेय वातावरण का पक्ष विद्यार्थी पर अपना प्रभाव डालता है|

शोध समस्या का अभिकथन

किशोर विद्यार्थियों में शालेय वातावरण का उनके अभिव्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

साहित्य समीक्षा

- **एग्नोली (2018**)ने विभिन्न वातावरणों में रचनात्मक उपलब्धि पर प्रेरणा के प्रभाव की जाँच करने के लिए वर्तमान अध्ययन में एक अव्यक्त चर मॉडलिंग दृष्टिकोण का उपयोग किया| इसका उपयोग रचनात्मकता से संबंधित अन्य भविष्यवक्ता के साथ संयोजन और बातचीत के रूप में किया गया था, जैसे की नए अनुभव के लिए खुलापन और अलग सोच वाले कार्य का अध्ययन किया गया|
- **हरबा(2004)** कुछ अध्ययनों ने बचपन और किशोरावस्था में भावनाओं की अभिव्यक्ति की पहचान के विकास का पता लगाया है| व्यवहार संबंधी अध्ययन बचपन और किशोरावस्था में निरंतर विकास का सुझाव देते है, जो प्रदर्शित भावना की श्रेणी के अनुसार भिन्न होता है लिंग,

सामाजिक - आर्थिक स्थिति और मौखिक क्षमता जैसे करक भी इस विकास को प्रभावित कर सकते है|

अध्ययन का उद्देश्य

- हायर सेकेण्डरी स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन|
- हायर सेकेण्डरी स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन|

अध्ययन की परिकल्पनायें

$H0_1$ हायर सेकेण्डरी स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा|

$H0_2$ हायर सेकेण्डरी स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा|

अध्ययन की परिसीमा

1. यह अध्ययन भिलाई क्षेत्र के निजी एवं सरकारी विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है|
2. यह अध्ययन केवल हायर सेकेण्डरी स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है|
3. यह अध्ययन छात्र -छात्राओं दोनों पर किया गया है |

अनुसंधान का प्रारूप

1**. शोध विधि** - शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

2.**न्यादर्श** - प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने शोध विषय के अनुरूप न्यादर्श का चयन किया है, जिसमें अध्ययन क्षेत्र तथा परिस्थितियों का विशेष ध्यान रखा गया है। न्यादर्श के चयन हेतु संभाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है तथा न्यादर्श चयन में पारदर्शिता व सत्यता लाने के लिये यादृच्छिक न्यादर्श चयन पद्धति का उपयोग किया गया है ताकि प्राप्त आँकड़ें सत्य स्पष्ट बिना

किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित हो। शोध में न्यादर्श की संख्या 200 मात्र है जिसमें निजी विद्यालय के 100 एवं सरकारी विद्यालय के 100 विद्यार्थी सम्मिलित किये गए हैं |

शोध के चर

- **स्वतंत्र चर** - शालेय वातावरण
- **आश्रित चर** - अभिव्यक्ति

उपकरण-

उपर्युक्त अध्ययन के लिये शोधकर्ता द्वारा शालेय वातावरण एवं अभिव्यक्ति के लिये मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है जो इस प्रकार है-

क्रमांक	उपकरण	निर्माता	उपकरण का नाम
1	शालेय वातावरण	एम. इमरान	स्कूल क्लाइमेट स्केल
2	अभिव्यक्ति	आर.पी वर्मा एवं यू मिश्रा	सेल्फ़ एक्सप्रेशन इन्वेंटरी

प्रस्तुत अध्ययन के प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या –

शोधकर्ता ने अपने शोध विषय की परिकल्पनाओं हेतु आवश्यक समंकों का संकलन, वर्गीकरण, सारणीयन, प्रस्तुतीकरण एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण एवं विवेचन प्रस्तुत किया है जो निम्नानुसार है -

$H0_1$ हायर सेकेण्डरी स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा |

प्रस्तुत परिकल्पना के अध्ययन के लिए एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया है जिससे प्राप्त विश्लेषण इस प्रकार है-

तालिका 1

शालेय वातावरण **एवं अभिव्यक्ति के प्रभाव हेतु t- तालिका**

निजी विद्यालय के विद्यार्थी	**प्रदत्तो की संख्या**	**मध्यमान (M)**	**प्रमाणिक विचलन (SD)**	**टी-मूल्य(t)**
शालेय वातावरण	100	100.27	17.08	5.37
अभिव्यक्ति		44.08	10.29	
				सार्थक

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है, कि टी **-** परीक्षण का मान **df=79** पर 5.37 है,जो **.01** स्तर पर सार्थक है**,** अतः परिकल्पना "हायर सेकेण्डरी स्तर के निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" को **अस्वीकार** किया जाता है| उपरोक्त सारणी में प्राप्त शालेय वातावरण के लिए मध्यमान 100.27 प्राप्त हुआ एवं **अभिव्यक्ति** के लिए मध्यमान 44.08 पाया गया जो कि स्पष्ट करता है, कि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों में शालेय वातावरण का प्रभाव अधिक है |

$H0_2$ हायर सेकेण्डरी स्तर के सरकारी विद्यालयों के विधार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा|

तालिका -2

शालेय वातावरण एवं अभिव्यक्ति के प्रभाव हेतु **t-** तालिका

सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	**प्रदत्तो की संख्या**	**मध्यमान (M)**	**प्रमाणिक विचलन (SD)**	**टी-मूल्य(t)**
शालेय वातावरण	100	101.97	20.08	6.01

अभिव्यक्ति		42.63	9.32	
				सार्थक

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है, कि टी – परीक्षण का मान df=79 पर 6.01 **है,जो .**01 **स्तर पर सार्थक है, अतः परिकल्पना** "हायर सेकेण्डरी स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का उनकी अभिव्यक्ति सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" **को** अस्वीकार **किया जाता है| उपरोक्त सारणी में प्राप्त शालेय वातावरण के लिए मध्यमान** 101.97 प्राप्त हुआ एवं **अभिव्यक्ति के लिए मध्यमान** 42.63 पाया गया जो कि **स्पष्ट करता है, कि** सरकारी **विद्यालय के** विद्यार्थियों **में शालेय वातावरण का प्रभाव अधिक है** |

शोध निष्कर्ष

शोधकर्त्री को अपने आंकड़ो के विश्लेषण के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शालेय वातावरण का प्रभाव विधार्थियों की अभिव्यक्ति पर पड़ता है | शालेय वातावरण किशोर विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। शिक्षकों,प्रबंधन और सहपाठियों द्वारा प्रदान किया गया सकारात्मक समर्थन किशोरों को अपने विचारों को खुलकर व्यक्त करने में मदद करता है। शालाओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका वातावरण सहयोगी, समावेशी और प्रेरणादायक हो, ताकि किशोरों की अभिव्यक्ति की क्षमता पूर्ण रूप से विकसित हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Agnoli, S. M. A. (2018). The role of motivation in the prediction of creative achievement inside of the school environment.
- Aka, E. I. (2010). Effect of problem-solving methods on science process skills and academic achievement. *Educational Research and Reviews, 7*(4), 256-258.
- Avci, M., & Koca, C. (2018). Gender differences in perception of body image and body image coping strategies among Turkish adolescents.

- Besancon, M. (2015). Influence of school environment on adolescents' creative potential, motivation, and well-being. *Learning and Individual Differences, 43*, 178-184.
- Bhawark, D. P. (2003). Culture's influence on creativity: The case of Indian spirituality. *Indian Journal of Psychology, 27*(1), 1-22.
- Cautin, R. L. J. (2001). Assessment of mode of anger expression in adolescent psychiatric patients.
- Edwards, J., & Johnston, H. J. (2002). Emotion recognition via facial expression and affective prosody in schizophrenia: A methodological review. *Clinical Psychology Review*.
- Ergin, H. (2008). The effect of scientific process skill education on students' scientific creativity, science attitudes, and academic achievement.
- Fleith, D. S. (2000). Teacher and student perceptions of creativity in the classroom environment. *Roeper Review, 22*(3).
- Herba, C., & Phillips, M. (2004). Development of facial expression recognition from childhood to adolescence: Behavioral and neurological perspectives.
- Singh, A., & Singh, A. K. (2015). A new powerful tool for improving problem-solving, decision-making, and creativity in teenagers. *The International Journal of Indian Psychology, 2*(30).
- Tella, A., & Adu, E. O. (2009). Information communication technology (ICT) curriculum development: The challenges for education for sustainable development. *Indian Journal of Science and Technology, 2*(3), 55-59.
- Valenzuela Vianna, C. R. G., & Martins, E. M. (2006). Creativity and barriers to its expression in online education courses.
- Zuhang, Y., & Lin, Y. (2011). The Chinese high school students’ stress in school and academic achievement.